उत्तर वैदिक काल का धार्मिक जीवन

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

धार्मिक जीवन

उत्तर वैदिक काल का धार्मिक जीवन में धर्म की दो धाराएं देखने को मिलती है| एक कर्मकांडीय धारा तथा दूसरा दार्शनिक धारा|

उत्तर वैदिक काल का धार्मिक जीवन में कर्मकांडीय धारा

इस काल में तंत्र-मंत्र, पशुबलि, यज्ञ पर अधिक बल दिया जाता था. विभिन्न देवी देवताओं की यज्ञों के माध्यम से पूजा का प्रचलन बढ़ा. प्रजापति विष्णु तथा रूद्र पहली बार एक साथ स्थापित हुए. (विष्णु पहले भी थे लेकिन इससे पहले उनका महत्व कम था)

उत्तर वैदिक काल का धार्मिक जीवन में दार्शनिक धारा

इसे उपनिषदों की धारा भी कहा जाता है. इसमें कर्मकांडो की निंदा की गई तथा ज्ञान और मोक्ष पर बल दिया गया. उपनिषदों में यज्ञ को टूटी हुई नौका के समान बताया गया.

इस तरह आपने देखा की 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक के काल को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है. उत्तर वैदिक काल का इतिहास की जानकारी हमें सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के आलावा ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद जैसे सहायक ग्रंथों से प्राप्त होती है|